

विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।  
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥

कुत्र विधेयो यत्नः विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।  
अवधीरणा क्व कार्या खलपरयोषित्परधनेषु॥

विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्।  
कोकिलानां स्वरो रूपं स्त्रीणां रूपं पतिव्रतम्॥

रूपयौवनसंपन्ना विशाल कुलसम्भवाः।  
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।  
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

सन्तोषः साधुसंगश्च विचारोध शमस्तथा ।  
एत एव भवाम्भोधावुपायास्तरणे नृणाम् ॥

मोक्षद्वारप्रतीहाराश्चत्वारः परिकीर्तिताः  
शमो विवेकः सन्तोषः चतुर्थः साधुसंगमः ॥

पश्य सत्संगमाहात्म्यं स्पर्शपाषाणयोदतः ।  
लोहं च जायते स्वर्णं योगात् काचो मणीयते ॥

शिरसा सुमनःसंगाध्दार्ढ्यन्ते तंतवोऽपि हि ।  
तेऽपि पादेन मृद्यन्ते पटेऽपि मलसंगताः ॥

कीटोऽपि सुमनःसंगादारोहति सतां शिरः ।  
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥

आजकल समाचार पत्र के बिना जीवन की कल्पना करना कठिन है। यह पहली और सबसे महत्वपूर्ण चीज है जिसे हर कोई हर सुबह देखता है। समाचार पत्र भी हमें दुनिया भर की हर खबर के बारे में अप-टू-डेट रखने में बहुत मदद करता है। इससे हमें पता चलता है कि समाज, देश और दुनिया में क्या चल रहा है। अखबार दुनिया के हर कोने से हम तक हर खबर और विचार पहुंचाता है। समाचार पत्र व्यापारियों, राजनेताओं, सामाजिक मुद्दों, बेरोजगार लोगों, खेल, खेल, अंतर्राष्ट्रीय समाचार, बच्चों, विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, मशहूर हस्तियों, मेलों, त्योहारों, प्रौद्योगिकियों आदि के बारे में जानकारी लाता है। यह हमारे ज्ञान, कौशल और विस्तार में हमारी मदद करता है। तकनीकी जागरूकता।

जीवन के उत्थान में परिश्रम का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जीवन में आगे बढ़ने के लिए, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए श्रम ही आधार है। परिश्रम से कठिन से कठिन कार्य संपन्न किए जा सकते हैं, जो परिश्रम करता है उसका भाग्य भी उसका साथ देता है जो सोता रहता है उसका भाग्य सोता रहता है। श्रम के बल अगम्य पर्वत चोटियों पर अपनी विजय का पताका पहरा दिया।

श्रम हर मनुष्य अपनी मंजिल पर पहुंच जाता है। अथक परिश्रम ही जीवन का सौंदर्य है। श्रम के द्वारा ही मनुष्य अपने आपको महान बना सकता है। परिश्रम ही मनुष्य के जीवन को महान बनाने वाला है। परिश्रम ही वास्तव में ईश्वर की उपासना है।

प्रकृति में फैलने वाली गंदगियाँ ही प्रदूषण का कारण बनती हैं। जब ये गंदगियाँ और अशुद्धियाँ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं तो उसे ही पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। हमारे पर्यावरण में अलग-अलग तरह से प्रदूषण हो सकते हैं जैसे: वायु, जल, ध्वनी, मृदा प्रदूषण आदि।

प्रदूषण से हवा, पानी, मौसम चक्र और जलवायु खराब होते हैं जिससे हमारे स्वास्थ्य को बहुत नुकसान होता है और हम रोगों के शिकार हो जाते हैं। प्रदूषण फैलने के कई कारण हैं जैसे: पेड़ों की कटाई, औद्योगीकरण, रसायनों का प्रयोग आदि।

ज्यादातर हम इंसानों की वजह से ही पर्यावरण प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है। प्रदूषण रोकना हम इंसानों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इसके लिए हमें लोगों को जागरूक करना होगा ताकि हम ऐसी कोई भी गतिविधि न करें जिससे प्रदूषण फैले और प्रकृति को नुकसान हो।